International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 03-06

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 03-06
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-09-2018
Accepted: 03-10-2018

उमाशंकर कौशिक
नेट, जे.आर.एफ., शोधार्थी, योग विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. उपेन्द्र बाबू खत्री
सहायक प्राध्यापक, योग विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. यतीन्द्रदत्त अमोली
सहायक प्राध्यापक, योग विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

Correspondence
उमाशंकर कौशिक
नेट, जे.आर.एफ., शोधार्थी, योग विभाग, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

भारतीय आगमिक परम्पराओं का तांत्रिक बौद्ध परम्पराओं पर प्रभावः एक समीक्षात्मक परिचय

उमाशंकर कौशिक, डॉ. उपेन्द्र बाबू खत्री, डॉ. यतीन्द्रदत्त अमोली

सारांश
आगम (तंत्रसाधना) के प्रमाण सिंधुघाटी सभ्यता से लेकर ऋग्वेदिय, अर्थववेदिय ऋचाओं, उपनिषदों, पुराणों, तांत्रिक ग्रंथों और हठयौगिक ग्रंथों आदि में स्पष्ट देखा जा सकता है। आगम से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो गुरू शिष्य परम्परा से आया हुआ है। इसे सामान्य अर्थों में नही लिया जा सकता यह ज्ञान सद्गुरू के बिना जानना संभव नही है। तंत्र साधना बाह्य पूजा से आरंभ होकर शरीर की आंतरिक शक्तियों पर को जागृत कर समस्त बन्धनों से मुक्त कर, अतीन्द्रिय ज्ञान की अनुभूति कर लेते है। यही ज्ञान ही आगम कहलाता है। इस आगम साधना के प्रवर्तक तंत्राधिपति–मंत्राधिपति शिव को माना जाता है। भारतीय आगमिक तंत्रों के अनुसार आगम (तंत्र) का ज्ञान प्रथमतः शिव से पार्वति को प्राप्त हुआ। आगम साधना को बाद में तंत्र साधना के रूप में जाना जाने लगा। समयांतराल में इन आगमिक साधना को सर्वत्र प्रचार–प्रसार के निमित्त शिव से ऋषि दुर्वासा को आदेश प्राप्त हुआ। दुर्वासा ने तंत्र साधना की द्वैत, द्वैताद्वैत और अद्वैत मार्गी साधनाओं के प्रचार के लिए त्र्यंबक, आमर्दक और श्रीनाथ को नियुक्त किया। इस प्रकार तंत्र के इस गूढ़ साधनाओं का आरंभ गुरू के निर्देशों से विशेष स्थानों, निर्जन क्षेत्रों, गुफाओं, शिक्तिपीठों– कामरूप, उड्डियान, जालंधर आदि स्थानों में होने लगे। इन तांत्रिक परम्पराओं में शैव, शाक्त, वैष्णव आदि सम्प्रदाय सबसे पुराने माने जाते है। साथ ही सौर, गाणपत्य, कौलमार्ग, स्मार्त आदि प्रमुख थे। शैव परम्पराओं के अंतर्गत पाँचवी–छठवी ई.पू. श्रीकंठ प्रवर्त्तित पाशुपत मत के उपरांत कालामुख, कापालिक, माहेश्वर, नाथ सम्प्रदाय आदि शाक्तों में मनसादेवी पार्वती, दुर्गा, अर्द्धनारिश्वर, दसमाविद्याऐं, श्रीविद्या आदि वैष्णवों में बैखानस, पांचरात्र, हरिहर आदि तांत्रिक परम्पराऐं प्रमुख थे। उपरोक्त तांत्रिक साधनाओं में से कुछ परम्पराओं को विभिन्न साधना परम्पराओं ने अपने साधनाओं में स्थान देने लगे थे। इनमें प्रमुख रूप से बौद्ध तांत्रिक परम्पराऐं सम्मिलित थे। तांत्रिक बौद्ध परम्परा से तात्पर्य बौद्ध साधकों का वह समुदाय जो बुद्धत्व की प्राप्ति तंत्र साधनाओं से किया करते थे। तांत्रिक बौद्धों का उद्घोष था कि उद्देश्य बुद्धत्व की प्राप्ति है। इस प्रकार तांत्रिक साधनाओं को स्वीकार कर एक सम्प्रदाय का रूप ले लिया जो महायानी कहलाये कालांतर में इनके अनेक सम्प्रदायों का विकास होता गया जिनमें मंत्रयान, वज्रयान, सहजयान, कालचक्रयान आदि सम्प्रदाय प्रमुख है। इन तांत्रिक बौद्ध परम्पराओं के द्वारा अपनी साधनाओं और अनुभूतियों को साहित्यिक रूप प्रदान करने का प्रयास जारी रहा जिनमें इन महायानी बौद्धों ने अपने रचनाओं में हिंदू देवी, देवताओं के समान ही देवी और देवताओं व सिद्ध पुरूषों की पूजा का विधान, उपनिषदिक ध्यान पद्धतियों को अपनाना, अवलोकितेश्वर पूजा, शिव–शक्ति के समान वज्र–वारिही का स्वरूप को आदर्श मानना, आसन,प्राणायाम, शरीरस्थ चक्र का जागरण व महासुखावस्था आदि बौद्ध धर्म के अनुरूप दर्शन प्रस्तुत करने लगे थे। इन तांत्रिक बौद्ध परम्पराओं के द्वारा संस्कृत, मिश्र संस्कृत, अपभ्रंश, तिब्बती, नेवारी आदि लिपि में रचनाऐं प्रकाश में आती गयी। इन मध्यकालीन तांत्रिक सिद्धों की साधनाओं व सिद्धियों ने भारत के बाहर नेपाल, तिब्बत आदि देशों की साधनाओं में अपना स्थान बना लिया था।

कुट शब्दः भारतीय आगम (तंत्र) साधना, शैव, शाक्त व हठयोग, तांत्रिक बौद्ध परम्परा, महायान, वज्रयान, सहजयान

प्रस्तावना
भारतीय आगमिक (तंत्र) परम्परा मुख्यतः क्रिया, चर्या, योग व ज्ञान में विभाजित है। जिनके अंतर्गत शरीर की बाह्य शुद्धि से लेकर अपने चेतना को समस्त बन्धनों पाशों से मुक्त कर शिवस्वरूप होने तक की यात्रा है। भारत में ऋग्वैदिक काल के पूर्व से ही तांत्रिक साधनाऐं प्रचलन में रही है। सिंधु घाटी की सभ्यता से प्राप्त शिवलिंगों का प्राचानीकाल, मध्यकाल व वर्तमान समय के विभिन्न तांत्रिक परम्पराओं में पूजा प्रचलन में है। वही ऋग्वेद में देवों की शक्तियों की चर्चा है। सृष्टि क्रम में देवों के साथ शक्तियाँ संबंधित है, इन्हें माया कहा गया है। तंत्र से संबंधित विभिन्न मंत्रों आदि का उल्लेख भी प्राप्त होता है। जीवानन्द द्वारा संपादित रूद्रयामल तंत्र में अथर्ववेद का संदर्भ दिया गया है।

जिनमें सभी जीवों के अंदर कामविद्या निवास करती कही गयी है। इस ग्रंथ में तांत्रिक–यौगिक प्रयोगों, कुण्डलिनी शक्ति, शरीर में चक्रों आदि की चर्चा की गयी है। साधना पीठों– कामरूप, जालंधर, पूर्णगिरी, उड्डियान आदि का उल्लेख किया गया है।[1] अर्थववेद में वशीकरण मंत्रों की चर्चा प्राप्त होती है। जादू को यातु और दूसरों को हानि पहुँचाने वाली आत्माओं को राक्षस की संज्ञा दी गयी है। उन दुष्टजनों को नष्ट करने की बात कही है, जो माया के उपासना करते है। महाभारत में दुर्गा को संबोधित दो स्त्रोतों कहे गये है। केनोपनिषद् में उमा की चर्चा प्राप्त होती हैं जो ब्रह्म के विषय में इन्द्र, वरूण और वायु से प्रश्न करती है। श्वेताश्वरोपनिषद् में ऋषियों, ब्राह्मणों ने देखा की शक्ति शिव से पृथक नही है।[1] उपरोक्त आगमिक साधनाओं में सबसे प्राचीन साधनाऐं शैव आगम को स्वीकार किया जाता है। जिनके अंतर्गत पाशुपत पाँचवी–छठी ई.पू.) की मानी जाता है।[2] जिनके प्रवर्त्तक श्रीकंठ माने जाते है। साथ ही शाक्त एवं वैष्णव तांत्रिक परम्पराओं को भी समकालीन माना गया है। इनमें परम्पराओं में क्रमशः शिव देवी और विष्णु उपास्य माने जाते है। शैव सम्प्रदायों में पाशुपत, कापालिक, कालामुख, माहेश्वर, काश्मीर शैव, नाथ सम्प्रदाय आदि सम्मिलित माने जाते है।[3] शाक्त आगम की परम्परों के अंतर्गत दुर्गा, काली, कामाख्या कालांतर में दस महाविद्याओं और अनेक सम्प्रदायों का विकास होता गया। इनके साथ ही स्वतंत्र तांत्रिक सम्प्रदायों के रूप में सौर सम्प्रदाय सूर्य उपासक, गाणपत्य (गणपति) की पूजा, कौलसम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, स्मार्त सम्प्रदाय आदि भी प्रचलित रही है। परमात्मा शक्ति संपन्न कहे गये है। कालिदास (जिनका काल चौथी शताब्दी के पूर्व) अर्द्धनारिश्वर का उल्लेख किया है। साथ ही दुर्गा के अन्य नामों में अपर्णा, उमा, गौरी, भवानी कि चर्चा की है। पी.वी. काणे महोदय ने धर्मशास्त्र का इतिहास नामक ग्रंथ के पाँचवें भाग में दुर्गा पूजा को प्रमाणों के आधार पर दो सौ ई. पूर्व स्वीकार करते है। सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस, तंत्र एवं योग विभाग के पूर्व अध्यक्ष व्रजवल्लभ द्विवेदी ने मथुरा संग्रहालय में रखी तेईस सौ साल पुरानी मनसा देवी की प्रतीमा का उल्लेख किया है।[4] इससे यह ज्ञात होता है कि तंत्रों में शक्ति की उपासना के प्रमाण पुरातन है। दुर्गासप्तसति, शिवपुराण, श्रीमद्भागवतम् आदि में शक्ति की उपासनों व महत्त्वों का उल्लेख किया गया है। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में तांत्रिक साधनाओं का प्रचार प्रसार अत्यधिक होने लगे थे उनमें भी शाक्त तंत्र का सबसे ज्यादा प्रचार–प्रसार माना जाता है। मध्यकालीन भारत में कौलयोगिनी तंत्र के प्रवर्त्तक मत्स्येन्द्रनाथ को माना जाता है। जो मध्यकालीन हठयौगिक परम्परा में भी प्रथम मानव सिद्ध के रूप में प्रतिष्ठित है। मत्स्येन्द्रनाथ नेपाल में तांत्रिक बौद्धों के मध्य अवलोकितेश्वर के रूप में पूजनीय है।[5] साथ ही तिब्बत के चौरासी सिद्धों में आदि सिद्ध लुईपा के नाम से भी प्रसिद्ध है। उपरोक्त तंत्रों की साधनाओं के अनुसार कुछ विद्वानों के मत–

पी.वी.काणे– बौद्ध धर्म के प्रारंभिक ग्रंथों– त्रिपिटक आदि में तंत्रों के प्रयोग के साक्ष्य नही मिलते और न ही मुद्राओं, मंत्रों, मण्डलों आदि का प्रमाण ही प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म पर लिखने वाले प्राचीन विद्वानों में ह्वेन्सॉंग, इत्सिंग आदि की रचनाओं में बौद्ध तंत्रों की कोई चर्चा प्राप्त नही होता।[6]

विनयतोष भट्टाचार्यः आरंभिक काल में बौद्ध एवं जैन धर्मों ने हिंदू देवी–देवताओं को अपनाया था।[7]

डॉ. विन्तरनित्ज ने अपना मत व्यक्त किया है कि त्रिपिटक में अथवा अन्य किसी प्राचीन ग्रंथों में इनका कोई प्रमाण नही मिलता कि बुद्ध और उनके प्राचीन अनुयायिओं का मुद्रा, मण्डल और धारणियों से कोई संबंध था। इसके साथ ही विभिन्न प्राचीन ग्रंथ, पालि, त्रिपिटक तथा सिंहली इतिहास इस परम्परा से अनभिज्ञ है। यहाँ तक की मन्त्रतत्त्व समन्वित प्राचीनतम वैपुल्यसूत्र, मंजुश्री मूलकल्प, गुह्यसमाज तंत्र जैसे ग्रंथ बुद्ध के द्वारा इस तंत्र उपदेश के विषय में मौन मिलते है। विन्तरनित्ज ने विनयतोष भट्टाचार्य के मतों का उल्लेख करते हुए कहा है कि भट्टाचार्य का यह कथन कि हिंदुओं की तंत्र साधना बौद्धों से आयी है उनके तर्क उनके ही तथ्यों के विरोध में है।[8] डॉ. जोशी अनेक तथ्य देकर इन मान्यताओं को अविश्वसनीय मानते है कि बुद्ध ने तंत्र का उपदेश दिया था है।

तांत्रिक बौद्ध परम्परा– सर्वप्रथम यह बात उल्लेखनीय है कि महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बारह सौ वर्ष बाद यह घोषणा होती है कि समस्त बौद्ध तंत्रों के उपदेष्टा बुद्ध है, उपरोक्त वचन डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य ने शांतिरक्षित के तत्त्वसंग्रह और कमलशील कृत टीका का उदाहरण देकर प्रस्तुत किया है। यह संदेहास्पद लगता है क्योंकि दोनों आचार्य महात्मा बुद्ध के चौदह सौ वर्ष बाद घोषणा कर रहे है।[9]

तांत्रिक बौद्ध परम्राओं की यह मान्यता है कि बुद्ध ने स्वयं इन तंत्रों की दीक्षा तीक्ष्णेन्द्रिय साधकों को धान्यकटक, श्रीपर्वत आदि स्थानों पर मंत्रयान आदि की देशना दी थी। इस प्रकार समस्त तांत्रिक बौद्ध परम्परा क्रिया, चर्या, योग एवं अनुत्तरयोग में विभाजित है। इनके और वर्गीकरण करने पर ये मातृतंत्र, पितृतंत्र, आदि भी विभाजित है। महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पूर्व से उनके अनुयायिओं में साधना पद्धतियों को लेकर मतभेद होने लगे थे और महापरिनिर्वाण के उपरांत ये मुख्य रूप से दो समुदायों थेरवादी (हीनयान) और महासांघिक (महायान) में विभक्त हो गये। बौद्ध धर्म में यान की विशेष चर्चा है जो निर्वाण प्राप्ति के साधन माने जाते है। हीनयानी समुदाय का विश्वास था कि बुद्ध के उपदेश मार्गों का अनुसरण कर ही निर्वाण पाया जा सकता है। परन्तु महायानी बौद्धों का यह मानना था कि हीनयान के साधना क्रम कठिन है, जिससे निर्वाण प्राप्ति में कई जन्मों का समय लग जाता है। महायानी समुदाय स्वीकारते थे कि स्वयं बुद्ध को निर्वाण पद कई जन्मों के बाद प्राप्त हुआ। परंतु तांत्रिक साधनाओं से इसी जन्म में ही बुद्धत्व की प्राप्ति की जा सकती है। इस प्रकार तांत्रिक साधनाओं की स्वीकार्यता महायानी सम्प्रदाय में स्पष्ट दिखता है। कालांतर में इसी महायानी परम्परा से मंत्रयान, वज्रयान, कालचक्रयान व सहयानी बौद्ध तांत्रिक सम्प्रदायों का विकास हुआ। इन तांत्रिक सम्प्रदायों में स्त्रियों का साधनाओं में प्रवेश अनीवार्य था। उपरोक्त विवरणों को थेरवादी महात्मा बुद्ध के उपदेशों के विपरित मानते है। और इन्हें वैदिक व तांत्रिक समप्रदायों से प्रभावित स्वीकार करते है। पी.व्ही. काणे ने अपने धर्मशास्त्र का इतिहास नामक ग्रंथ में आनंद और बुद्ध के उपदेशों को थेरवादी मूल ग्रंथ से उद्धृत किया है। जिसमें बुद्ध ने आनंद को अपने द्वारा प्रवर्त्तित मार्ग में स्त्रियों के प्रेवश से पाँच सौ वर्षों में ही इस मार्ग के पतन का कारण कहा है।[10]

शाक्त तंत्र का बौद्ध तंत्र साधना पर प्रभावः शाक्त आगम की साधनाओं के प्रमाण आज से लगभग तेईस सौ वर्ष पुरानी देवी की प्रतिमा मथुरा संग्रहालय में उसके आस–पास के ग्राम से पुरातत्त्व उत्खन्न से प्राप्त हुए थे। समयांतराल से महायानी परम्परा के तांत्रिक बौद्ध सिद्धों ने जो वेदों के जानकार थे और आगम साधनाओं को जानने वाले थे। उन्होंने बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए तंत्र साधनाओं का माध्यम लिया और इन साधनाओं, दर्शनों को बौद्ध दर्शन के अनुकूल बनाते चले गये। उपरोक्त कथनों को प्रमाणित करते निम्न महायानी ग्रंथों के विषय वस्तुओं को देखा जा सकता हैं– कल्पना–मण्डीतिका, चतुःशतकस्तोत्र, मैत्रेयव्याकरण, जातकमाला, अवदानशतक, कर्मशतक, दिव्यावदान, अवदानकल्पलता जैसे ग्रंथों के अध्ययन से चमत्कार पूर्ण कथा, लोकोत्तरवाद बोधिसत्त्व की उदारता, सिद्धि, बुद्ध की लीला, बुद्ध भक्ति आदि विशेषताऐं आदि दिखाई देती है। इसी प्रकार महायान के प्रसिद्ध वैपुल्यसूत्रों– अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता, सद्धर्मपुण्डरीक, ललितविस्तर, लंकावतार, सुवर्णप्रभास, गण्डव्यूह, तथागतगुह्यक, समाधिराज और दसभूमीश्वर के अध्ययन से अनेक देवताओं और देवियों की कल्पना ऐंद्रजालिक सिद्ध और शक्तिमान बुद्ध, नमोस्तु बुद्धाय मंत्र, पारमिताओं का माहात्म्य विस्तार, वज्रगर्भ, ध्यान, समाधि, तंत्र प्रभाव, श्रीमहादेवी, सरस्वती आदि देवियों की कल्पना, हारिति, चण्डिका,

जैसी शक्तियों की कल्पना का पता लगता है। मूर्ति रचना धारणियों व विभिन्न लोकों की कल्पना एवं मंत्र प्रयोग आदि का भी पता चलता है।[11] महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के उपरांत भिक्षुओं का कुछ समुदाय शाक्त परम्परा से प्रभावित दिख पड़ता है। इसी तरह महायानी साहित्य में तांत्रिकता के अंतर्गत मैथुन की साधनात्मक प्रभाव और उनकी प्राचीनता एवं प्रवर्त्तक व पंचमकार (मद्य, मांस, मुद्रा, मत्स्य, मैथुन) का प्रयोग, पंचमकार के अन्य तत्त्वों में मुद्रा का वीराचारगत विकास आदि का प्रयोग आरंभ हो चला था जो सातवीं से नौ वीं शताब्दी में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा शाक्त परम्परा के साधनाओं के अनुरूप ही अपने साधनाओं में शक्ति तत्त्व के रूप में स्त्रियों को अपने साधनाओं के विकास में सहगामी बनाने का प्रमाण प्राप्त होने लगता है। इस विषय पर रामधारी सिंह दिनकर ने बौद्ध धर्म पर शाक्त प्रभाव के अंतर्गत विभिन्न उद्धरणों से बौद्धों के तांत्रिक सम्प्रदायों में शक्ति तत्त्वों की समावेश की चर्चा की है जिनमें बौद्ध धर्म में बुद्ध के साथ शक्ति तत्त्वों को स्थापित करने व अपने साधना में मुद्रा रूप में स्त्रियों के प्रवेश से बौद्ध धर्म के मूल साधनाओं का स्वरूप पूरा बदल गया आदि को बड़े ही स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है।[12] इस प्रकार भारतीय आगमिक परम्पराओं के प्रभावों को महायानी ग्रंथों में स्पष्ट देखा जा सकता है। विशेष रूप से महायान धर्म में बुद्ध की अलौकिक तथा अनेक बोधिसत्वों ने अनेक देवताओं और उनके मण्डलों के विकास में योगदान दिया। तांत्रिक बौद्ध धर्म के अद्वयवज्रसंग्रह में संगृहीत तत्त्वरत्नावली में महायान को दो भागों में विभाजित किया गया है– पारमितानय और मंत्रनय। इसी मंत्रयान से कालांतर में वज्रयान, कालचक्रयान, व सहजयान आदि का विकास हुआ। यह अद्वयवज्र द्वारा किया गया विभाजन माना जाता है।[13] जो बौद्ध धर्म में साधनात्मक परिवर्तनों को इंगित करता है। इस विभाजन से बौद्ध मतों में स्पष्ट रूप से तांत्रिक साधनाओं की पूरी परम्परा का विकास बौद्ध धर्म के मूल स्वभाव से विलग प्रतीत होते है।

तांत्रिक शैव साधना एवं वज्रयानी साधनाः तांत्रिक शैव साधना में शिव उपास्य है। इन सम्प्रदायों में शिव को पशुपति कहा गया है। पाशुपत मत सबसे प्राचीन माना गया है। जिस प्रकार पशु पाश या रस्सी से बंधकर सीमित हो जाता है। वैसे ही मानव इन्द्रियों, मन, बुद्धि के वशीभूत हो जरा, जन्म, मरण आदि में ही घुमते रहता है। इन शैव साधनाओं में शरीर को प्रथमतः शुद्ध करना, आसन, प्राणायाम, कुण्डलिनी जागरण आदि की साधनाओं से अभेद्य बनाने की साधना निहित थी। साथ ही शिव की प्रतीमा कुण्डलन धारण किये हुए अपने हाथों में डमरू नाद का प्रतीक व त्रिशुल प्रकृति के गुणों से मुक्ति के प्रतीक थे। शैव कापालिकों से बौद्धों के संबंध के विषय में नगेन्द्रनाथ ने विस्तार से उल्लेख किया है।[14] इस प्रकार वज्रयानी बौद्ध साधकों ने शिव के समानान्तर ही अवलोकितेश्वर का रूप दिया व उनकी पूजा भी प्रचलित की थी जिनमें उनके देवता बाघम्बर पहने शिव के प्रतिमा के ही समान है। इसी प्रकार वज्रयानी साधकों ने वज्र का अर्थ ऐसे शरीर की प्राप्ति से लगाया है जो अभेद हो जिसे हर परिस्थितियों व प्रभावों से अप्रभावित हो। वज्रदेह की चर्चा पातंजल योग सूत्र के विभूतिपाद में प्राप्त होता है। जिसके अंतर्गत कायसम्पदा में वज्र जैसे देह जिसमें शरीर सूडौल, निरोगी, सुन्दर और वज्र के समान दृढ़ होना कहा गया है।[15] गोपीनाथ कविराज के अनुसार नाथ योगियों (सिद्धों) के साधनाओं में यह दिख पड़ता है कि देहजय करना अनिवार्य कहा गया है। बौद्ध सिद्धों भी शरीर की मूल सम्पदा कहे जाने वाले वज्रदेह कि ओर, इन विशेषताओं की ओर आकर्षित हुए थे।[16]

हठयोग साधना व तांत्रिक बौद्ध सम्प्रदाय सहजयानः हठयोग के साधनाओं में नाथ सिद्ध प्रसिद्ध है। हठयोग के प्रथम मानव सिद्धों में मत्स्येन्द्रनाथ का नाम प्रथम है। जिन्हें सहजयानी 84 सिद्धों में प्रथम लुईपाद के नाम से जाना जाता है। यह कथन मत्स्येन्द्रनाथ के ग्रंथों का वैज्ञानिक रिति से 8 हस्तलिपियों के साथ सम्पादन करने वाले डॉ. प्रबोधचंद बागची के है। जिस ग्रंथ का नाम कौलज्ञाननिर्णयः है।[17] तिब्बती एवं नेपाली बौद्धों के मध्य मत्स्येन्द्रनाथ इस लोक के देवता के रूप में पूजित रहे है। नाथ सिद्धों की सूची प्रस्तुत करने वाले 13वीं शताब्दी के ग्रंथ वर्णरत्नाकर में अनेक बौद्ध सिद्धों का नाम नाथ सिद्धों की सूची में प्राप्त होता है। साथ ही सहजयानी सम्प्रदाय के चौरासी सिद्धों मे अनेक नाथ सिद्धों को शामिल किया गया है। इनमें तिब्बती बौद्ध सिद्धों में सबसे अधिक ग्रंथ के रचनाकार, कवि कान्हुपाद या कृष्णपाद इन्हें काणेरीनाथ अथवा कृष्णनाथ के नाम से नाथ सिद्धों की सूची में भी इनका नाम प्राप्त होता है। साथ ही इनके गुरू जालंधरीपाद भी जालंधरनाथ नाम से इस सूची में सम्मिलित है।[18] इस सूची में प्रथम स्थान मीननाथ का प्राप्त होता है। जो मत्स्येन्द्रनाथ का ही नामान्तर है। डॉ. प्रबोधचंद बागची ने कौलज्ञाननिर्णयः की भूमिका में मत्स्येन्द्रनाथ के विभिन्न नामों की चर्चा की है। सहजयानी सिद्धों के ग्रंथों में नाथ योगियों के ग्रंथ सिद्धसिद्धांतपद्धति, हठप्रदीपिका आदि के ही समान नाड़ियों की संख्या 72,000 व मुख्य नाड़ियों में जहाँ नाथ सिद्धों ने इड़ा, पिंगला व सुषुम्ना कहा वही सहजयानी बौद्धों इन नाड़ियों को अपने मूल ग्रंथों में ललना, रसना व अवधूती कहा है।।[19] नाथ सिद्धों ने मूलाधार चक्र, मणिपूर चक्र, अनाहत चक्र, सहस्रार चक्र को निर्माण चक्र, धर्म चक्र सम्भोग चक्र व उष्णीष चक्र का नाम दिया। नाथ सिद्धों के समान ही सहजयानी बौद्ध सिद्धों ने उस साधना की उत्तम अवस्था को सहज, महासुख आदि नाम दिया है। जो काय, वाक, चित्त से परे है। इन अनुभूतियों को अद्वय आदि नामों से पुकारते थे।[20] सहजावस्था को नाथसिद्धों ने द्वैताद्वैत विवर्जित कहा है। जो इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त से परे है। सहज को बताया नही जा सकता यह स्वयं में ही अनुभव (स्वसंवेद्य) किया जा सकता है।

उपसंहारः भारतवर्ष में आगम (तंत्र) का विकास आदिकाल से माना जाता है जिसके उल्लेख ऋग्वेद, अर्थवेद, उपनिषदों और पुराणों में भरी पड़ी है। इसके प्रमाण सिंधु घाटी सभ्यता के उत्खन्न से प्राप्त शिवलिंग एवं पुरात्तव विभाग, मथुरा को तेईस सौ वर्ष पुरानी देवी की प्रतिमा प्राप्त हुई है जो इस बात के प्रमाण है। तंत्र को भारतीय ज्ञान परम्परा का पंचम वेद माना जाता है जो शिव मुख से पार्वती तक पहुँची। यही आगम शास्त्र है। बौद्ध धर्म में तांत्रिक साधना का प्रवेश महायानी परम्परा से माना जाता है। इन बौद्ध तांत्रिक साधकों ने इसे और भी विकास दिया साथ ही तांत्रिक ग्रंथों की रचनाएँ प्रकाश में आने लगी जो संस्कृत, मिश्र संस्कृत के ग्रंथ उपलब्ध होने लगे थे। विभिन्न भारतीय तांत्रिक सम्प्रदायों शैव, शाक्त, नाथ सम्प्रदायों से उत्तरोत्तर विकसित विभिन्न बौद्ध सम्प्रदायों मंत्रयान वज्रयान, कालचक्रयान, सहजयान, सम्प्रदायों ने अपने पूर्व सम्प्रदायों के अनुकूल साधनाओं को अपने सम्प्रदायों में शामिल करते रहे। जिसमें मंत्र, मण्डल, जप, मूर्ति स्थापना, आदि बुद्ध के साथ जोड़कर साधनाओं का क्रम विकसित होता रहा। परंतु भारतीय तंत्र साधनाओं व बौद्ध तांत्रिक साधनाओं के मूल ग्रंथों, साधनाओं, दार्शनिकता, भारतीय पुरातात्त्विक उत्खन्नों एवं विभिन्न विद्वानों के मतों से यह स्पष्ट होता है की भारतीय आगमिक तांत्रिक साधनाओं से बौद्ध तंत्र प्रभावित रहा है। क्योंकि बौद्ध धर्म के मूल शास्त्रों में तंत्र साधनाओं के प्रमाण प्राप्त नही होते। परंतु कालांतर में जो तांत्रिक बौद्ध संस्कृत साहित्य, अपभ्रंश साहित्य, चर्यापद, दोहा आदि ग्रंथों में देखें जा सकते है। भारतीय आगमिक परम्परा से प्रभावित कालांतर के बौद्ध परम्पराओं कि अगर समीक्षा की जाए तो ये मूल बौद्ध सिद्धांतों से इतर व भारतीय आगमिक सिद्धांतों, साधनाओं व दर्शनो से प्रभावित प्रतीत होते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अर्जुन चौबे अनुवादित काणे पी.वी. रचित, धर्मशास्त्र का इतिहास, पंचम भाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, पंचम संस्करण, 2014. पृ. 10–11.

2. मिश्र सत्येन्द्र कुमार, रूद्रशिव की वैदिक अवधारणा पाशुपत–सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक एवं आचार्य, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ हिंदी रिसर्च, (पुष्पांजलि), भाग–4, जुलाई 2018.पेज न. 13–16.
3. पाण्डेय राजकुमारी, भारतीय योग परम्परा के विविध आयाम, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 2008, पृ.263.
4. आगम और तंत्रशास्त्र, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विवेचन, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, 1984, भूमिका
5. बागची प्रबोध चंद, संपादित, कौलज्ञाननिर्णय, मेट्रोपोलेटियन प्रिंटिग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, लिमिटेड, कलकत्ता,1934, भूमिका पृ.13.
6. अर्जुन चौबे अनुवादित काणे पी.वी. रचित, धर्मशास्त्र का इतिहास, पंचम भाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, पंचम संस्करण, 2014.पृ.6.
7. वही, पृ.7.
8. वही, पृ.7.
9. उपाध्याय नागेन्द्रनाथ, बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2009, पृ.39.
10. अर्जुन चौबे अनुवादित काणे पी.वी. रचित, धर्मशास्त्र का इतिहास, पंचम भाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, पंचम संस्करण, 2014. पृ. 2–8.
11. उपाध्याय नागेन्द्रनाथ, बौद्ध अपभ्रंश साहित्य, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, 2001,पृ.14–15.
12. दिनकर रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017,पृ.169–178.
13. गुप्त शशिभूषण दास, एन इन्ट्रोडक्शन टू तांत्रिक बुद्धिज्म, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, 1950, पृ.161–169.
14. उपाध्याय नागेन्द्रनाथ, बौद्ध अपभ्रंश साहित्य, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, 2001,पृ. 275–278.
15. पातंजलयोगसूत्र 3/45. गीताप्रेस, गोरखपुर
16. अवेद्यनाथ एवं अन्य संपादित, योगवाणी पत्रिका (मत्स्येन्द्र विशेषांक), अंक 1–3, जनवरी–मार्च,1992, पृ 49.
17. बागची प्रबोध चंद, संपादित, कौलज्ञाननिर्णय, मेट्रोपोलेटियन प्रिंटिग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, लिमिटेड, कलकत्ता,1934, भूमिका
18. द्विवेदी मुकुन्द,संपादित, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, भाग–6, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण, 2013 पृ.44–47.
19. कृष्णपाद रचित, हेवज्रपंजिका–योगरत्नमाला, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी, 2006 पृ.9
20. नेगी ठाकुर सेन, वज्रयानी अनुत्तरयोग, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी, 1999. पृ.240–249.